P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-2* (Part-1) October- 2018
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

# हाँसी का किला एक कलात्मक अध्ययन

**पूनम कुमारी**
व्याख्याता,
व्यावसायिक कला विभाग,
फतहचन्द महिला
महाविद्यालय,
हिसार

**सारांश**

हाँसी, अपने पल्ले बेहद बेशकीमती ऐतिहासिक सामग्री बांधे हरियाणा का एक हँसता–हँसाता साधारण नगर, एकदम ऊँचे स्थान पर सामान्यतः दो प्रकार से बसा हुआ दिखता है। एक पुरानी बस्ती और दूसरी नई बस्ती जो कि किलानुमा चारदीवारी के अन्दर बसी हुई है।

सभ्यता के आरम्भ से ही मनुष्य ने अपनी सुरक्षा के लिए मकान तथा शत्रुओं से सुरक्षा के लिए सुदृढ़ भवन और दुर्गों का निर्माण किया। दुर्गों में विशिष्ट हाँसी का दुर्ग हरियाणा के इतिहास में महत्वपूर्ण स्थान रखता है। इसे किसने और कब बनवाया यह कहना तो असम्भव है पर हाँ यह निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि यह है बहुत ही प्राचीन। कुछ इसे इण्डोसीथियनों की कृत्ति मानते है तो कोई कुषाणों की, कोई यौद्यियों की, कुछ का मानना है कि पृथ्वीराज चौहान ने मुगल शासकों से रक्षा के लिए हाँसी में किले का निर्माण करवाया था। इसलिए इस किले को पृथ्वीराज चौहान के किले के नाम से जाना जाता है।

यह सुरक्षा की दृष्टि से बहुत ही शक्तिशाली दुर्ग था–एक दम अभेध्य। इसकी रक्षा पंक्ति दोहरी थी। एक बाहरी और दूसरी भीतरी। इसमें मुख्यतः पांच प्रवेश द्वार थे–दिल्ली द्वार, बड़सी द्वार, उमरा द्वार, हिसार द्वार तथा सिसाय द्वार। पहले ये द्वार पूरी तरह से सुरक्षित थे तथा इन पर मजबूत किवाड़ लगे होते थे। अब बड़सी द्वार छोड़कर सब नष्ट हो गए है। बड़सी गेट का निर्माण अलाऊद्दीन खिलजी के काल का माना जाता है। कई लोग इसे पृथ्वीराज चौहान के काल का बताते है चूंकि इस गेट का कुछ शिलालेख आलंकारिक शैली में हैं, जिससे हिन्दुत्व झलकता है। दरवाजे के अन्दर बांई ओर स्थित शिलालेख इसकी मुरम्मत का वर्णन करता है।

किले के अन्दर कुछ स्थापत्य है जो अब तक सुरक्षित है। मुख्य द्वार, मीर साहब का कक्ष, बारहदरी, अस्तबल, जेल, पीर की दरगाह, कुआँ, स्नानागार तथा स्तम्भ आदि किले की कलात्मक प्रस्तुति का उदाहरण देते हैं। समय–समय पर की जाने वाली खुदाई से प्राप्त वस्तुएं, चित्रित धूसर मृदभाण्ड आदि भी किले का कलात्मक वर्णन करते हैं।

**मुख्य शब्द :** ऐतिहासिक सामग्री, किलानुमा चारदीवारी, शिलालेख, म्यूजियम।

**प्रस्तावना**

हाँसी, अपने पल्ले बेहद बेशकीमती ऐतिहासिक सामग्री बाँधे हरियाणा का एक हँसता–हँसाता साधारण नगर यह हिसार से पूर्व में 25 कि.मी. की दूरी पर दिल्ली फाजिल्का राजमार्ग पर उत्तर अक्षांश $29^0 7$ और रेखांश $75^0 58'$ पर स्थित है। यह भारत की राजधानी दिल्ली से लगभग 150 कि.मी. की दूरी पर है और राज्य की राजधानी चण्डीगढ़ से 225 कि.मी.। यह देहली–हिसार रेलवे लाईन पर स्थित है।[1] आस–पास के शहरों से जैसे–हिसार, भिवानी, जीन्द आदि से सड़क के रास्ते अच्छी तरह से जुड़ा हुआ है। नगर के समीप कोई सदानीरा नदी भी नहीं है और न ही कोई पर्वतीय सिलसिला है। नगर साधारणतयाः दो प्रकार से बसा हुआ दिखता है। एक पुरानी बस्ती और दूसरी नई बस्ती जो कि किलानुमा चारदीवारी के अन्दर बसी हुई थी।

शहर का नाम हाँसी कैसे पड़ा, कब बसा और इसे किसने बसाया? ठोस ऐतिहासिक तथ्यों के अभाव में इन प्रश्नों के ठीक–ठाक उत्तर दे पाना बहुत मुश्किल है। लेकिन एक लोक विश्वास है कि पूर्व मध्यकाल में दिल्ली के शासक अनंगपाल तोमर ने इसे बसाया था। पर इतिहास की कसौटी पर यह लोक विश्वास खरा नहीं उतरता। पुरातत्ववेताओं का कहना है कि शहर पूर्व मध्यकाल में तोमरों के यहाँ आने से बहुत पहले का बसा हुआ है।

ऐसा ही एक अन्य लोकमत है कि पृथ्वीराज की एक रानी रणथम्भौर की राजकुमारी हँसावती थी, पृथ्वीराज ने उसी के नाम से 'असिगढ़' को हाँसी मे बदल दिया लेकिन यह मत बेबुनियाद है। इसका कहीं कोई प्रमाण नहीं है।

पृथ्वीराज द्वितीय के रायल स्काटिस्ट म्युजिमय में रखे 1677 ई0 के शिलालेख में नगर का नाम असिका लिखा हुआ है। कई जगह इसे आसी भी लिखा है। ऐसा माना जाता है कि हाँसी असिका का बिगड़ा हुआ रूप ही है। असिका कालान्तर में आसी–हांसी हो गया। अब भी बहुत से बड़े–बुढ़े हाँसी को आसी कहते सुने जा सकते है। अतः हांसी एक अतिप्राचीन नगर है जो प्राचीन काल से ही अस्तित्व में रहा है।

सभ्यता के आरम्भ से ही मनुष्य ने अपनी सुरक्षा के लिए कई प्रकार के प्रबन्ध किए। जंगली जानवरों से बचाव के लिए पहले अपने निवास को कांटों से घेरता था। धीरे–धीरे उसने मकान बनाना सीखा और जब शत्रुओं से सुरक्षा की आवश्यकता पड़ी तो सुदृढ़ भवन और दुर्गों का निर्माण किया।

दुर्गों में विशिष्ट हांसी का दुर्ग हरियाणा के इतिहास में महत्वपूर्ण स्थान रखता है। इसे किसने और कब बनवाया यह कहना तो असम्भव है, पर हाँ यह निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि यह है बहुत ही प्राचीन कुछ इसे इण्डोसीथियनों की कृति मानते हैं तो कोई यौधेयों की, कुछ का मानना है कि पृथ्वीराज चौहान ने मुगल शासकों से रक्षा के लिए हाँसी में किले का निर्माण करवाया था, लेकिन इस पर मुगल शासकों ने कब्जा कर लिया। बाद में उन्होंने इस किले में मस्जिद का निर्माण भी करवाया था। पर्यटक आज भी इस किले और मस्जिद के खुबसूरत दृश्य देख सकते है। कुछ विद्वानों का मत है कि इसे पुष्य भूतियों ने (सम्भवतः हर्ष ने) थानेसर के किले की तरह ही बनवाया था। लेकिन यह अनुमान लगाया जाता है कि यह इन सबसे पहले का है–उत्तर वैदिक काल का। किले की खुदाई से चित्रित धूसर मृदभांड भी प्राप्त हुए हैं जिन्हें विद्वान प्राचीन आर्यों से सम्बद्ध मानते हैं। किला पहले साधारण रहा होगा तो इण्डोसिथियन, कुषाण, यौधेयों आदि ने इसे और बढ़ाया होगा।

पूर्व मध्यकाल में अनंगपाल तौमर ने इसे सुरक्षा की दृष्टि से अभेध्य दुर्ग बना दिया था। बाद में पृथ्वीराज चौहान ने इसे और अधिक शक्तिशाली और सुव्यवस्थित बनाया इसलिए इसे किले को पृथ्वीराज चौहान के किले के नाम से जाना जाता है क्योंकि किले को पूर्ण रूप पृथ्वीराज चौहान ने ही दिया था।

यह सुरक्षा की दृष्टि से बहुत ही शक्तिशाली दुर्ग था–एक दम अभेध्य। इसकी रक्षा पंक्ति दोहरी थीःएक बाहरी और दूसरी भीतरी। बाहरी रक्षा पंक्ति पत्थर की दीवार से बनी थी जो शहर के चारों और बनाई गई थी। इसमें मुख्यतः पांच प्रवेश द्वार थे। दिल्ली द्वार (पूर्व में), बड़सी द्वार (दक्षिण में), उमरा द्वार (दक्षिण–पश्चिम में), हिसार द्वार (पश्चिम में) और सिसाय द्वार (उत्तर में)।[3] पहले से सभी द्वार पूरी तरह से सुरक्षित थे इन पर बड़े मजबूत किवाड़ लगे होते थे। यहाँ बकायदा चौकी पहरा बैठता था। चार गेट छोटे थे, जबकि बड़सी गेट सबसे बड़ा था। अब बड़सी द्वार छोड़कर सब द्वार नष्ट हो गए है। जबकि बड़सी गेट आज भी हाँसी के इतिहास का मूक गवाह बना हुआ है। आज के बड़सी गेट को कालान्तर में कई नामों से जाना जाता रहा है। इनमें बड़ा सिंह, भट्ट, सिंहद्वार, प्रोतोली व भट्ट गेट प्रमुख है।

बड़सी गेट का निर्माण किसने करवाया, इसके बारे में इतिहास में अलग–अलग विवरण मिलते है। इस गेट के अग्रभाग पर लगे फारसी भाषा में लिखित शिलालेख के मुताबिक इसका निर्माण 1303 ई0 में अलाउद्दीन खिलजी ने करवाया था। इतिहासकार बताते हैं कि यह शिलालेख आज भी रॉयल स्कॉटिश संग्रहालय एडनबर्ग में मौजूद है।

बड़सी गेट का संस्कृत भाषा में लिखा शिलालेख उक्त ब्रिटिश संग्रहालय के पीछे भी अपनी एक कहानी है। इतिहास के जानकारों के मुताबिक 1193 ई0 में मौहम्मद गौरी के सेनापति कुतुबद्दीन ने जब हाँसी पर आक्रमण किया था तब संस्कृत शिलालेख को मस्जिद से उखाड़कर अपने कर्नल टौड को भेंट में दे दिया था। जो इसे इंग्लैंड ले गया था। अलाउद्दीन खिलजी ने जब इस गेट की मरम्मत करवाई तो इस पर निर्माता के रूप में अपने नाम का पत्थर लगवा दिया था। ज्यादातर इतिहासकारों का मत है कि इस गेट का निर्माण पृथ्वीराज चौहान ने 1167 ई0 में माघ शुक्ल सप्तमी संवत् 1224 विक्रमी को संपूर्ण करवाया था तथा इस पर संस्कृत भाषा में अपनी सफलता की गाथा का वर्णन भी अंकित करवाया था।[5]

बड़सी गेट महज आने–जाने का एक दरवाजा भर ही नहीं, बल्कि शिल्प एवं वास्तुकला का भी एक बेजोड़ नमूना है। इसमें लगे शिलालेख उस जमाने की काव्य शैली से भी अवगत करवाते हैं। शेरों से लड़ते यौद्धायों के भित्ति चित्र शौर्य के प्रतीक है। कमल पुष्प हिन्दु स्थापत्थ कला को दर्शाते हैं। इस गेट की दीवारों पर लगे शिलालेख एवं अंकित चित्र देश की विभिन्न संस्कृतियों व कला से भी रूबरू करवाते है। खिड़कियां व झरोखे राजस्थानी भवन निर्माण शैली की वैभवता से परिचित करवाते हैं। गेट के ऊपर जाने के लिए निर्मित सीढ़ियां इसे बनाने वाले शिल्पियों की दक्षता को दर्शाती है। (चित्र संख्या–1)

किले का एक ही मुख्य प्रवेश द्वार था जो आज भी ठीक–ठाक हालत में स्थित है। किले का शेष ढाँचा बिखरा पड़ा है। आज की स्थिति में तो यह अनुमान लगाना भी कठिन है कि वास्तव में यह महान दुर्ग था कैसा। किले की फसीलों के साथ गहरी खाई थी जो कि सदैव पानी से भरी रहती थी। इसके निशान अब भी मौजूद है। चौकोर आकार का किला 30 एकड़ क्षेत्र में फैला हुआ है। जो 52 फुट ऊँची और 37 फुट मोटी दीवार से घिरा हुआ है।[6] प्राचीन भारत के सबसे मजबूत किलों में से एक था। किले के अन्दर कुछ स्थापत्य है, जो अब तक सुरक्षित है।

मुख्य द्वार की बाहरी दीवार पर कोई अलंकरण नहीं किया गया हैं दीवार समतल हैं। गेट सुरक्षित है तथा गेट के दोनों तरफ की दीवारें क्षतिपूर्ण अवस्था में हैं। मुख्य द्वार अन्दर की तरफ से बाहरी द्वार की अपेक्षा छोटा है। यह द्वार भी समतल है इस पर भी कोई अलंकरण नहीं किया गया है। (चित्र संख्या–2)

**उद्देश्य**

संसार में विद्यमान प्रत्येक वस्तु अपनेआप में एक विशिष्ट प्रदेश लिए हुए होती है। अतः आदिकाल की कला हमारे समाज में व्याप्त है जिसका प्रयोग किसी न किसी उद्येश्य हेतु किया जाता था जब से मनुष्य ने होश सम्भाला तभी से उसने अपनी भावाभिव्यक्ति एवं जीवन की आवश्यकताओं की पूर्ति से कला का उपयोग किया है स्थापत्य कला के अविस्मरणीय उदाहरण जो भारतीय कला के अद्भुद नमूने प्रस्तुत कर रहे हैं हमें अनेकों जगह देखने को मिलते हैं अतः हाशी का किला एक कलात्मक अध्ययन पर प्रस्तुत लेख हाशी के किले से लोगों को परिवर्तित करना उस समय की कलात्मक शैली को संसार के सम्मुख प्रस्तुत करना ही लेख का मूल उद्देश्य है।

**मीर साहब का कक्षः**

किले के मुख्य द्वार के बाहर मीर साहब का कक्ष अब भी ठीक–ठाक अवस्था में स्थित है। इसके दो मुख्य द्वार के दोनों तरफ तीन–तीन स्तम्भ किए गए हैं और दोनों तरफ एक–एक खिड़की बनाई गई है। यह देखने में एक हवादार कक्ष के समान प्रतीत होता है।

**बारहदरी**

किले के अन्दर जाकर हमें एक कक्ष दिखाई देता है जो बारहदरी है। बारहदरी के आस–पास थोड़ा–थोड़ा स्थान छोड़कर चारदीवारी बनाई गई है। बारहदरी के दो मुख्य द्वार है, जिन पर लोहे के गेट लगाए गए है। बारहदरी में कुल 50 कक्ष है, 66 स्तम्भ है। बारहदरी में स्थित कक्ष की छत अन्दर की तरफ से गुम्बदनुमा आकार लिए हुए है। लेकिन बाहर की तरफ से छत समतल है। प्रत्येक कक्ष में रोशनी के लिए रोशनदान भी लगाए गए है। बारहदरी के मुख्य द्वार पर अन्दर की तरफ अलंकरण किया गया है। जो पत्थर को तराश कर बनाया गया है। वह अलंकरण देखने में हंसों की पंक्ति प्रतीत होता है। हंसों की पंक्ति के नीचे भी एक अलंकारिक पंक्तिनुमा डिजाइन बनाया गया है। बाहर की दीवार पर कोई अलंकरण नहीं किया गया है लेकिन अर्धचन्द्राकार स्तम्भ के साथ बनाया गया है। पूरी बारहदरी छोटी, पक्की ईंटों से ही बनाई गई है।
(चित्र संख्या–3)

**अस्तबल**

इस अस्तबल का निर्माण हैदर बैग ने करवाया था अस्तबल अब पूर्ण अवस्था में नहीं है इसका आधा हिस्सा टूट चुका है और आधा कुछ ठीक–ठाक अवस्था में है। अस्तबल के उस आधे हिस्से को देखकर हम अनुमान लगा सकते हैं कि शायद इसमें कुल छः कक्ष होंगे जिनमें अब तीन सुरक्षित हैं। जिनमें से अब एक स्तम्भ पर फूल–पत्ती अलंकरण जो पत्थर को तराश कर बनाए गए हैं। स्तम्भ के ऊपरी भाग में एक हंसते हुए राक्षस का चेहरा भी दिखाई देता है।

अन्य स्तम्भों पर Stencil Design बनाए गए है। मुख्य द्वार पर कोई अलंकरण नहीं किया गया है। अस्तबल के भी आर–पार दो द्वार हैं दोनों द्वारों पर कोई गेट नहीं लगाया गया है। लेकिन अस्तबल के तीन कमरें हैं उन तीनों पर लोहें के गेट बनाए गए हैं जो आजकल बंद ही रहते है उसे जन सामान्य व दर्शक नहीं देख पाता। अस्तबल के एक तरफ सीढ़ियाँ बनाई गई हैं जिन पर कोई गेट नहीं लगाया गया है। कोई भी दर्शक छत पर जाकर किले का सुन्दर नजारा देख सकता है। छत और फर्श पक्की ईंटों के बनाए गए है।

**जेल**

अलाऊद्दीन ने हाँसी के किले में विशेष जेलखाना बनवाया जहाँ शहजादों तथा जलालुद्दीन के पुत्रों को कैद किया।

जेल का एक मुख्य द्वार बनाया गया हैं जिस पर लोहे का गेट लगाकर ताला लगाया गया है। इसके अन्दर कोई प्रवेश नहीं कर पाता लेकिन लोहे की पत्तीयों द्वारा निर्मित गेट ऐसा है कि दर्शक आसानी से जेल के अन्दर का दृश्य देखा पाता है। मुख्य द्वार के दोनों तरफ दो छोटे–छोटे द्वार बनाए गए हैं लेकिन उन्हें लोहे की जालीदार खिड़कियों से बन्द किया गया है। वे देखने में ऐसा लगता है मानो उन्होंने उन्हें भी द्वार ही बनाया होगा लेकिन बाद में उन्हें खिड़कियों की तरह जालीदार बना दिया होगा। बाहर की तरफ से तीनों द्वारों की दीवार का डिजाइन एक जैसा वर्गाकार बनाया गया है। ईंटों से ही दीवार पर ज्यामितिय आकार बनाए गए हैं और गेट का डिजाइन भी ईटों से ही बनाया गया हैं जेल के अन्दर की दीवारों को भी बाहरी दीवारों जैसा ही बनाया गया है। आकार के आधार पर इसके तीन कक्ष दिखाई देते है। अन्दर की तरफ से छत गुम्बदनुमा आकार लिए हुए है और बाहर की तरफ से सिर्फ बीच वाले कक्ष यानि मुख्य द्वार वाले कक्ष की छत ही गुम्बदनुमा आकार की है अन्य दो कक्षों की छत समतल है। जेल के दूसरी तरफ सीढ़ियाँ बनाई गई है। उस पर कोई गेट नहीं लगाया गया है। इन सीढ़ियों से जेल की छत पर जाकर किले के सुन्दर दृश्य का आनन्द उठाया जा सकता है। (चित्र संख्या–4)

**पीर की दरगाह**

पृथ्वीराज चौहान के शासन के बाद मुगल शासकों ने किले पर कब्जा किया और इस मस्जिद का निर्माण करवाया। यह मस्जिद अब भी कुछ ठीक–ठाक अवस्था में हैं यह बहुत कुछ टूट चुकी है। अब भी इस मस्जिद में श्रद्धालु दूर–दूर से पूजा करने आते है। मस्जिद की बाहरी दीवार में स्तम्भ के ऊपर शिलालेख को स्थापित किया गया है।

**स्नानागार**

किले के अन्दर एक स्नानागार भी है। जो रानियों और उनकी परिचायिताओं के नहानें के लिए बनाया गया था।

**कुआँ**

किले के अन्दर जेल की पीछे एक कुआँ स्थित है। यह कुआँ अब जर्जर अवस्था में है और काफी टूट चुका है। इस कुएँ पर एक स्तम्भ रखा गया हैं जो आलंकारिक है। स्तम्भ के बीच में एक चेहरा रोता हुआ दिखाई पड़ता हैं। स्तम्भ के अलंकरण को देखकर लगता है कि स्थापत्य कला उस समय बहुत चर्मोत्कर्ष पर पहुँच गई थी। पत्थर को काटकर बनाया गया जैमदबपस क्मेपहद बहुत की आकर्षक प्रतीत होता है। कुएँ पर रखे गए इस स्तम्भ पर घोड़े का पैर गुदा हुआ हैं। कहते है

कि जब मुहम्मद गौरी ने पृथ्वीराज चौहान की आंखे निकलवा दी थी। वह जब किले पर आए तो यहां आगे कुआँ होने पर घोड़े ने छलांग लगा दी, जिससे राजा कुएँ के पास जा गिरे और घोड़ा कुएँ में! मरते वक्त भी घोड़े ने अपने मालिक को बचा लिया। (चित्र संख्या–5)

**स्तम्भ**

किले के अन्दर खुले स्थान में एक स्तम्भ स्थापित किया गया है। उस स्तम्भ का डिजाइन चारों तरफ से एक जैसा है। पास में ही एक स्तम्भ ओर है जिसे शेड डालकर सुरक्षित रखा गया है। यह स्तम्भ गोल है। इसका डिजाइन भी घुमावदार एक जैसा है। इस स्तम्भ के ऊपर की शीर्ष पर पैर बने हुए हैं वहां के लोगों की मान्यता है कि ये पैर रानी लक्ष्मीबाई के है। (चित्र संख्या–6)

**सुरंग**

फिरोजशाह तुगलक ने हांसी को हिसार से जोड़ने वाली एक सुरंग का निर्माण भी करवाया था। जो आमतौर पर बंद ही रहती है।

**निष्कर्ष**

भारत के दुर्गों में विशिष्ट स्थान रखने वाला हाशी का किला में वर्तमान समय में कुछ स्थापत्य ही सुरक्षित हैं ताकि सब समय तथा मौसम की मार से खत्म हो गया है मुख्य द्वारा, मीरसाहब का कक्ष, बारहदरी, अस्तबल, जेल पीर की दरगाह, कुँआ, स्नानागार, स्तम्भ तथा समय–समय पर की जाने वाली खुदाई से प्राप्त वस्तुएँ मूर्तियाँ वर्जित धूसर मृदभाण्ड आदि किले का कलात्मक वर्णन प्रस्तुत करते हैं।

पुरातत्व विभाग द्वारा समय–समय पर की जाने वाली खुदाई में मृदभाण्ड, भगवान बुद्ध, भगवान महावीर आदि की जैन मूर्तियां भी प्राप्त हुई है जो संग्राहालय में संरक्षित है।

पाद टिप्पणीयां:–

1. *http://en.wikipedia.org/wiki/hansi*
2. *haryanaheritage.blogpot.in*
3. *nativeplanet.com*
4. *आर्य,राकेश कुमार, स्वतन्त्रता संग्राम का इतिहास*
5. *डायमण्ड बुक्स प्रा0 लि0 नई दिल्ली, संस्करण 2015*
6. *http//hellotravel.com*
7. *सैनी, जगदीश, हाशी के ऐतिहासिक धार्मिक स्थल संस्करण 2005*

चित्र संख्या–1

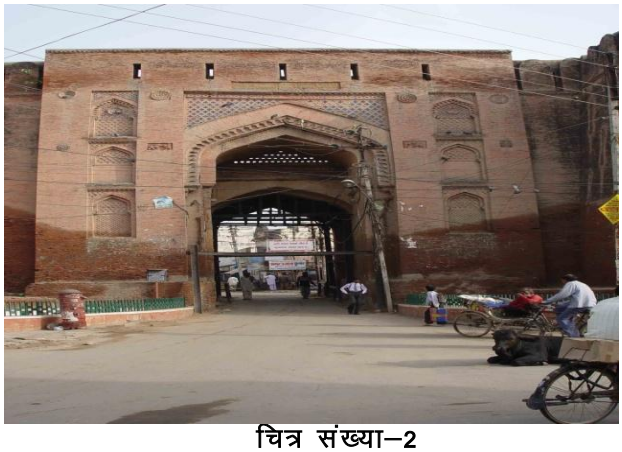

चित्र संख्या–2

चित्र संख्या–3

चित्र संख्या–4

P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-2* (Part-1) October- 2018
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

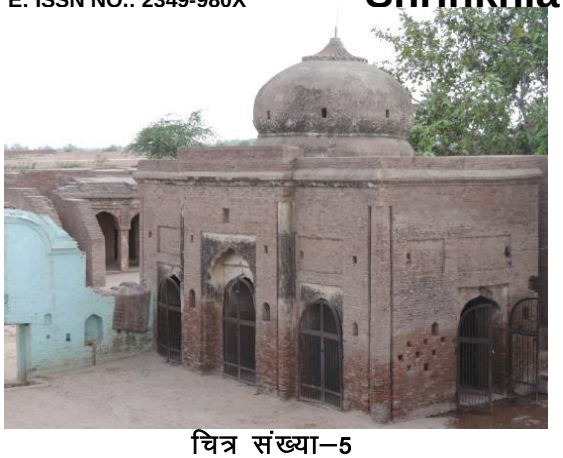

चित्र संख्या–5

चित्र संख्या–6